Gyanvividha, Vol.-2; Issue-4 (Oct.-Dec.) 2025 : PP-444-446

ज्ञानविविधा

कला, मानविकी और सामाजिक विज्ञान की सहकर्मी-समीक्षित, मूल्यांकित, त्रैमासिक शोध पत्रिका

ISSN : 3048-4537(Online)
3049-2327(Print)
IIFS Impact Factor-2.25
Vol.-2; Issue-4 (Oct.-Dec.) 2025
Page No.- 444-446
©2025 Gyanvividha
https://journal.gyanvividha.com

Author's :
बबिता कुमारी
NET, JRF
क्रमांक– BR04600116
पैट क्रमांक– E2209003
हिन्दी विभाग, ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, कामेश्वरनगर, दरभंगा.

Corresponding Author :
बबिता कुमारी
NET, JRF
क्रमांक– BR04600116
पैट क्रमांक– E2209003
हिन्दी विभाग, ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, कामेश्वरनगर, दरभंगा.

कबीर और नागार्जुन के साहित्य में लोक दर्शन

सार–संक्षेप : भारतीय साहित्य की विविध विधाओं में दो महान कवि–कर्मठत्व की छाप अत्यंत गहरी और विशिष्ट रूप से उजागर होती है– कबीर और नागार्जुन। दोनों का साहित्य अपने समकालीन सामाजिक एवं दार्शनिक परिवेश की जीवंत तस्वीर प्रस्तुत करता है। विशेषतः लोक दर्शन के संदर्भ में, इनके साहित्य में उस काल के समाज की मर्मस्थल की झलक मिलती है। लोक दर्शन, अर्थात् लोकजीवन, उसकी सांस्कृतिक, धार्मिक, सामाजिक एवं दार्शनिक मान्यताओं एवं विचारों का समष्टिगत स्वरूप, कबीर और नागार्जुन के साहित्य में प्रबलता से मिलने वाला पक्ष है। कबीर और नागार्जुन के साहित्य में लोक दर्शन भारतीय समाज के विभिन्न युगों के सांस्कृतिक, सामाजिक एवं दार्शनिक चरित्र का द्योतक है। उनके काव्य और पद न केवल लोकजीवन के दृश्य प्रस्तुत करते हैं, बल्कि उस जीवन के आंतरिक सार का दर्शन कराते हैं। ये दोनों कवि भारतीय लोकधारा के अभिन्न भाग हैं, जिन्होंने अपने समय की सामाजिक सीमाओं को पार करते हुए मानवता, समानता और आध्यात्मिकता के सार्वकालिक संदेश दिए। इस प्रकार, कबीर और नागार्जुन के साहित्य में लोक दर्शन भारतीय सांस्कृतिक चेतना का अनमोल हिस्सा है, जो आज भी जन–जन के हृदय में जीवंत है और समाज की प्रगति एवं सुधार के मार्गदर्शन में सहायक सिद्ध होता है। उनके साहित्य का अध्ययन एवं चिंतन हमें न केवल हमारे अतीत से जोड़ता है, बल्कि वर्तमान और भविष्य के लिए भी प्रेरणा एवं दिशा प्रदान करता है। प्रस्तुत शोध–पत्र के माध्यम से कबीर और नागार्जुन के साहित्य में प्रकट लोक दर्शन की समग्र व्याख्या किया गया है।

परिचय : कबीर दास भारतीय भक्ति आंदोलन के एक महान संत और कवि थे, जिनका काव्य लोकजीवन की सच्चाइयों और मानवीय अनुभवों का गहरा दर्शन प्रस्तुत करता है। उनकी रचनाओं में भक्ति, दार्शनिकता, सामाजिक समरसता और लोकधर्म के तत्त्वों का अद्‌भुत समागम देखा जा सकता है। कबीर की साहित्यिक कृतियाँ न केवल धार्मिक उपदेश प्रस्तुत करती हैं, बल्कि वे सामाजिक विसंगतियों, अंधविश्वासों और कुप्रथाओं के प्रति भी तीव्र आलोचना करती हैं। इस प्रकार, कबीर की रचनाएँ लोक दर्शन की दृष्टि से अत्यंत समृद्ध और महत्वपूर्ण स्थल रखती हैं।

लोक दर्शन का अर्थ और महत्त्व : लोक दर्शन से आशय है सामान्य जनता के जीवन, उनकी मान्यताओं, सोच, व्यवहार और जीवन मूल्यों का समग्र चित्रण। यह दर्शन उनके जीवन के व्यवहारिक पहलुओं जैसे कर्म, नैतिकता, अध्यात्म और समाज से सम्बंधित अनुभवों को अभिव्यक्त करता है। कबीर की रचनाओं में यह लोक दर्शन जीवंत रूप में उपस्थित है, क्योंकि उन्होंने अपने काव्य के माध्यम से समाज के आम जन के जीवन में व्याप्त सच्चाई और संघर्ष को स्पष्ट किया है।

कबीर के लोक दर्शन के प्रमुख तत्व :

- **समाज के प्रति समरस दृष्टिकोणः** कबीर ने जाति, धर्म, वर्ण व्यवस्था और अंध श्रद्धा जैसी सामाजिक कुरीतियों की कड़ी आलोचना की

है। उन्होंने कहा कि मनुष्य का मूल्य उसके कर्म और गुणों से होता है, न कि उसकी जाति या धर्म से। उनकी यह सोच तत्कालीन समाज में सामाजिक समरसता और समानता की प्रेरणा बन गई। कबीर का लोक दर्शन इस दृष्टि से लोकजीवन में बंधित सामाजिक भेदभावों को दूर करने का सार्थक प्रयास था।

- **भक्ति और अध्यात्म की सरल व्याख्याः** कबीर की रचनाओं में भगवत भक्ति का स्वरूप सहज और लोकप्रिय है। उनका लोक दर्शन भक्ति को किसी विशेष पूजा–पद्धति या धार्मिक अनुष्ठान तक सीमित नहीं करता, बल्कि वे कहते हैं कि सच्ची भक्ति तो हृदय की शुद्धता और प्रेम मात्र है। उन्होंने गुरु और श्रद्धा का महत्व बताते हुए कहा कि भक्ति वह है जो मनुष्य के भीतर से निकलती है, न कि बाह्य क्रियाओं से।
- **जीवन के सहज सिद्धांतः** कबीर की कविताएं जीवन के सरल और गूढ़ सत्य को प्रस्तुत करती हैं। वे कर्म और संकल्प की महत्ता पर बल देते हैं और जीवन को व्यर्थ की बातों से दूर रखने का संदेश देते हैं। उनका लोक दर्शन मानव जीवन की व्यावहारिकता और आध्यात्मिकता का अद्भुत समन्वय दर्शाता है। कबीर कहते हैं कि मनुष्य को आत्मज्ञान ही मोक्ष की ओर मार्गदर्शन करता है।
- **ज्ञान और अज्ञान का द्वंद्वः** कबीर अपने दोहों में ज्ञान और अज्ञान का विमर्श प्रमुखता से करते हैं। उनका लोक दर्शन ज्ञान के उदय और अज्ञान के विनाश को ही मुख्य उद्देश्य मानता है। कबीर के अनुसार, अज्ञानता पूर्ण अंधकार है जो मनुष्य को भोक्ता बनाती है और ज्ञान उसे मुक्त और साक्षर बनाता है।
- **लोकजीवन के विविध रूपः** कबीर की रचनाओं में किसानों, कुम्हारों, संतों, साधुओं और आम जनजीवन के अनेक पहलुओं का वर्णन मिलता है। उन्होंने अपने दोहों और साखियों में जीवन के छोटे–छोटे अनुभवों को इस प्रकार चित्रित किया कि वे आज भी अपनी प्रासंगिकता बनाए रखते हैं।

कबीर की रचनाओं में लोक दर्शन न केवल आध्यात्मिकता और भक्ति का सार प्रस्तुत करता है, बल्कि यह आम जन जीवन की सामाजिक, सांस्कृतिक और नैतिक वास्तविकताओं का निरीक्षण भी करता है। उनकी कविताओं के माध्यम से हमें समकालीन समाज की विसंगतियों और योग्यताओं का बोध होता है। कबीर का लोक दर्शन एक ऐसे आदर्श समाज की कल्पना करता है जहाँ भेदभाव न हो, जहां प्रेम, सत्य और सदाचार का शासन हो। इसलिए कबीर की रचनाएँ भारतीय लोक दर्शन की अमूल्य धरोहर हैं, जो आज भी साहित्य, दर्शन और समाजशास्त्र की दृष्टि से शोध–अध्ययन एवं अनुकरणीय हैं।

कबीर का लोक दर्शन उनकी रचनाओं में सहजता, गम्भीरता और अंतर्मुखी चिंतन के माध्यम से प्रकट होता है। कबीर साहेब 15वीं–16वीं शताब्दी के संत साहित्य के महान प्रतिनिधि हैं, जिनका साहित्य भक्ति आंदोलन के जन–आधारित लोकधाराओं से सिंचित रहा। कबीर का लोक दर्शन मूलतः समाज के उन वर्गों की आवाज़ है, जो शास्त्रों, पंडितागार और विधिवेधों से दूर रहकर सीधे अद्वैतात्मक अनुभव के आधार पर जीवन के मूल सत्य को समझने का प्रयास करते हैं। कबीर के दोहों, साखियों और पदों में सहज भाषा का प्रचूर प्रयोग है, जो आम जन के लिए सुलभ है। उनके विचारों का मूल अंश यह है कि व्यक्ति की मुक्ति किसी बाहरी विधि या साधन से नहीं बल्कि आत्मा के दिव्य अनुभव से होती है। इस लोक दर्शन में जाति, वर्ण, धर्म, और भेद को निरर्थक बताया गया है। कबीर की दृष्टि में मानव मात्र एक ही मूल का है, और ईश्वर साक्षात् हृदय में व्याप्त है। वे धर्मांधता, छद्म–पूजा, और जड़ कर्मकांड की तीव्र निन्दा करते हैं। यह लोक दर्शन ग्रामीण और नगरीय समाज के धार्मिक और सामाजिक प्रथाओं पर कटाक्ष करते हुए उनके जीवंत दृश्य प्रस्तुत करता है। उनके पद जैसे–

"बैरी कबीर काम न आवै, जो साचे उपाए।
ना काहू से बैर राखो, जो खोटा न ठाए।"

यहां न केवल सामाजिक सद्भाव की अपील है, बल्कि सरल जीवन और सच्चे मनुष्यता पर जोर दिया गया है।

नागार्जुन की रचनाओं में लोक दर्शन : भारतीय साहित्य में नागार्जुन का विशेष स्थान है। वे आधुनिक हिंदी कविता के प्रमुख कवि माने जाते हैं, जिनकी रचनाओं में लोक जीवन का अद्भुत प्रतिबिंब देखने को मिलता है। नागार्जुन की कविताओं में न केवल सामान्य जनता की समस्याओं और उनकी सामाजिक चेतना की अभिव्यक्ति होती है, बल्कि उन्होंने लोक जीवन के सादगी, उसकी विविधता और उसकी जीवन यात्रा को भी प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया है। उनका साहित्य लोक संस्कृति के साथ गहरी संवेदनशीलता और सहानुभूति से जुड़ा हुआ है, जो उनके काव्य को जन–जन की समझ तक पहुँचाने का माध्यम बनता है। नागार्जुन का जन्म बिहार के दरभंगा में हुआ था, जो कि ग्रामीण भारत की सांस्कृतिक और सामाजिक विविधताओं का केंद्र था। उन्होंने अपनी शिक्षा और सामाजिक अनुभवों के माध्यम से गांव–देहात के जीवन के साथ गहरा जुड़ाव स्थापित किया। यह जुड़ाव उनके साहित्य में साफ झलकता है। नागार्जुन ने अपने गीत, कविताएँ, और गद्य में गाँव के जीवन की सुख–दुःख की झलक प्रस्तुत की है। आर्थिक कठिनाइयों, सामाज में व्याप्त विषमताओं, परंपराओं का स्तब्ध प्रभाव, और जीवन के संघर्षों को वे बड़े सहज और प्रभावी ढंग से चित्रित करते हैं।

नागार्जुन ने लोक संस्कृति के विभिन्न तत्वों को अपनी रचनाओं में समाहित किया है। उनके काव्य में लोक गीतों की लय और शैली का प्रभाव स्पष्ट देखा जा सकता है। वे अक्सर ग्रामीण जीवन की बोलचाल की भाषा और मुहावरों का प्रयोग करते हैं, जिससे उनकी कविता जनसाधारण के लिए सरल और सजीव हो उठती है। उनकी रचनाओं में गीत, गजल, और दोहे जैसे पारंपरिक शैलियों का भी समावेश मिलता है, जो लोक साहित्य के तत्वों को हिंदी साहित्य में एक नई ऊर्जा प्रदान करता है। नागार्जुन की कविताएँ किसानों, मजदूरों, महिलाओं तथा सामाजिक रूप से वंचित वर्गों की आवाज हैं। वे ग्रामीण जीवन के साथ जुड़ी विभिन्न सामाजिक कुरीतियों जैसे जातिवाद, आर्थिक रूप से पिछड़ेपन, शिक्षा की कमी, और सामाजिक अन्याय को अपने काव्य में समेटते हैं। उनकी कविताएँ न केवल लोक जीवन की यथार्थता को प्रस्तुत करती हैं,

बल्कि सामाजिक सुधार की प्रेरणा भी देती हैं। उनके शब्दों में ग्राम्य जीवन की कष्टप्रद स्थितियाँ तथा लोगों की आशाएँ, उनकी प्रतिक्रिया और उनके संघर्ष की छवि जीवंत हो उठती है।

नागार्जुन की रचनाओं में लोक चेतना एक केंद्रीय भूमिका निभाती है। वे जन–जन की सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक स्थितियों को समझ कर अपनी कविताओं में व्यक्त करते हैं। उनकी कविताएँ निस्वार्थ भाव से समाज के हाशिये पर पड़े लोगों की जीवन स्थितियों पर प्रकाश डालती हैं। वे सिर्फ काव्यकार नहीं, बल्कि एक संवेदनशील सुधारक भी थे, जिन्होंने लोक जीवन की समस्याओं को उजागर किया और सामाजिक न्याय के लिए आवाज़ उठाई। नागार्जुन की रचनाओं में लोक जीवन का समालोचनात्मक और संवेदनशील चित्रण मिलता है। वे लोक संस्कृति के सच्चे दूत थे जिन्होंने अपनी कविताओं के माध्यम से ग्रामीण जीवन की हार्दिकता, उसकी पीड़ा, संघर्ष, और जीवन की सरलता को अभिव्यक्त किया। उनके साहित्य ने न केवल हिंदी साहित्य को समृद्ध किया, बल्कि भारतीय समाज की भूमिका और उसकी विविधताओं को भी सामने रखा। नागार्जुन की रचनाओं में लोक जीवन का प्रतिबिंब हमें सामाजिक चेतना, सांस्कृतिक मूल्य और जीवन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण सिखाता है। इस प्रकार, नागार्जुन के साहित्य का लोक जीवन में योगदान अमूल्य और प्रेरणादायक है।

नागार्जुन के साहित्य में भी लोक दर्शन का अभिव्यक्त स्वरूप विशेष महत्त्व रखता है। नागार्जुन हिंदी काव्य के विख्यात आधुनिक कवि हैं, जिन्होंने समकालीन सामाजिक एवं राजनीतिक परिवर्तनों को अपने साहित्य में समाहित किया। नागार्जुन का लोक दर्शन मुख्यतः ग्रामीण भारत के जीवन के यथार्थों का उद्घाटन करता है। वे लोकजीवन के संघर्ष, कठिनाइयों, परंपराओं, तथा आम जनता के आस्थाओं एवं विश्वासों को विश्वसनीयता एवं सहृदयता के साथ प्रस्तुत करते हैं। नागार्जुन की कविता में ग्राम्य लोक संस्कृति की विविध आवाजें सुनाई देती हैंकृउनकी भाषा सहज एवं प्रभावशाली है, जो सीधे किसानों, मजदूरों, एवं शहरी निम्न वर्ग के मर्म से जुड़ी है। उनका लोक दर्शन सामाजिक न्याय, समानता, और मानवीयता के मूलभूत सिद्धांतों पर आधारित है। वे सामाजिक कुरीतियों, गरीबी, और अन्याय के विरुद्ध आवाज उठाते हुए जीवन के व्यावहारिक पहलुओं के प्रति संवेदनशील हैं। विशेष रूप से नागार्जुन का लोक दर्शन प्रगतिशील विचारों के साथ गाँठ बाँधता है, जो भारतीय सामाजिक एवं सांस्कृतिक उभरते परिवेश के प्रतिबिंब के रूप में उभरता है। उनके छन्दों और गीतों में लोक जीवन की सुकून, पीड़ा, उत्साह और आशा के भाव समाहित हैं। उनके काव्य में साधारण मानव की भावनाओं और आकांक्षाओं को गहराई से प्रस्तुत किया गया है, जैसे कि वे स्वयं उस लोक का हिस्सा हों।

जब हम कबीर और नागार्जुन के लोक दर्शन की तुलना करते हैं, तो स्पष्ट होता है कि दोनों में लोकजीवन की एक गहन समझ और मानवीय मूल्यों के प्रति प्रतिबद्धता समान है, परंतु अभिव्यक्ति के स्वरूप और आलोक में भिन्नता भी विद्यमान है। कबीर का लोक दर्शन अधिक आध्यात्मिक और तत्वमीमांसीय है, जो साधना और ईश्वर की प्राप्ति के प्रति सजग है, जबकि नागार्जुन का लोक दर्शन अधिक भौतिकवादी, सामाजिक–आधारित और यथार्थपरक है। कबीर जहां लोकजीवन को आध्यात्मिक मुक्तिसाधना के संदर्भ में देखते हैं, वहीं नागार्जुन सामाजिक परिवर्तन के दस्तूर में उसका आकलन करते हैं। कबीर का लोक दर्शन समरसता, उदारवाद और सद्भाव की दुहाई देता है, जो किसी भी सामाजिक एवं धार्मिक भेद को दूर करने का प्रयत्न करता है। वहीं, नागार्जुन का लोक दर्शन संघर्ष, न्याय और समानता की विजय का आह्वान करता है। दोनों का साहित्य लोकजीवन के विविध पहलुओं को विभेदित दृष्टिकोणों से उजागर करता है, जो समकालीन समाज की स्थितियों, आकांक्षाओं और संघर्षों की वास्तविकता का सजीव प्रतिनिधित्व बनता है।

निष्कर्ष : निष्कर्ष के तौर पर कहा जा सकता है कि कबीर और नागार्जुन के साहित्य में लोक दर्शन भारतीय समाज के विभिन्न युगों के सांस्कृतिक, सामाजिक एवं दार्शनिक चरित्र का द्योतक है। उनके काव्य और पद न केवल लोकजीवन के दृश्य प्रस्तुत करते हैं, बल्कि उस जीवन के आंतरिक सार का दर्शन कराते हैं। ये दोनों कवि भारतीय लोकधारा के अभिन्न भाग हैं, जिन्होंने अपने समय की सामाजिक सीमाओं को पार करते हुए मानवता, समानता और आध्यात्मिकता के सार्वकालिक संदेश दिए। इस प्रकार, कबीर और नागार्जुन के साहित्य में लोक दर्शन भारतीय सांस्कृतिक चेतना का अनमोल हिस्सा है, जो आज भी जन–जन के हृदय में जीवंत है और समाज की प्रगति एवं सुधार के मार्गदर्शन में सहायक सिद्ध होता है। उनके साहित्य का अध्ययन एवं चिंतन हमें न केवल हमारे अतीत से जोड़ता है, बल्कि वर्तमान और भविष्य के लिए भी प्रेरणा एवं दिशा प्रदान करता है।

संदर्भ स्रोत :

1. भगवती प्रसाद सिंह, (2014) कबीर भक्ति परम्परा और उनका साहित्य, राजपाल एण्ड सन्स, नई दिल्ली, पृ. 108
2. हरबंसलाल शर्मा, (2015) कबीर और हिन्दी साहित्य, राधाकृष्ण प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली, पृ. 58
3. रामस्वरूप चतुर्वेदी, (2014), कबीर का काव्य और संवेदना, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, पृ. 35
4. विजय बहादुर सिंह, (2002) नागार्जुन का रचना संसार, संमार्ग प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 84
5. डॉ0 वीरेन्द्र सिंह, (2009) यायावार कवि नागार्जुन, ज्ञानगंगा प्रकाशन, इलाहाबाद, पृ. 30
6. डॉ0 प्रभा दीक्षित, (2017) नागार्जुन का काव्य दर्शन, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, पृ.167.

•